



युवा जीवन

सितंबर 2022

वह आकार देगा।

आपके भीतर जो खजाना है

उसे दुनिया को प्रकट करने के लिए।

प्रिय युवाओं!!!

यीशु मसीह के अतुलनीय नाम से, मैं आपका अभिवादन करता हूँ।

इस युवा जीवन पत्रिका के माध्यम से आपसे फिर मिलना वास्तव में बहुत खुशी की बात है।

इस महीने हम "मोल्ड" (आकार) शब्द पर ध्यान केंद्रित करने और कई चीजें सीखने जा रहे हैं।

एक कुम्हार मिट्टी को लेता है, उसे गूँथता है और एक उपयोगी पात्र में आकार देता है।

कुम्हार के हाथों में कोई भी मिट्टी उपयोगी पात्र बन सकती है।

लेकिन मिट्टी को विभिन्न प्रक्रियाओं से गुजरना पड़ता है। सबसे पहले इसमें से गंदगी को हटाना होता है।

फिर इसे अच्छी तरह से रौंदना होता है। तब मिट्टी का स्वभाव नरम हो जाता है और उसे कुम्हार द्वारा मनचाहे आकार में बनाया जा सकता है। कई बार मिट्टी काम करने लायक नहीं रहती और खराब हो जाती है।

इसी तरह कई किशोरों का जीवन खराब हो जाता है, जब वे खुद को कुम्हार के हाथों में समर्पित नहीं करते हैं।

इस तरह एक किशोर ने सपना देखा। अच्छी तरह से अध्ययन करने, प्रगति करने और हासिल करने का सपना। उसने 10वीं कक्षा तक अपने सपने की दिशा में काम किया, लेकिन पारिवारिक माहौल और समाज उनके लिए अनुकूल नहीं था। ग्यारहवीं कक्षा के दौरान, उसने अपने दोस्तों के साथ, शिक्षकों की अवज्ञा करना शुरू कर दिया, गलत लोगों से दोस्ती की, फिर एक गुंडा बन गया, हत्या, डकैती आदि जैसे अपराधों में शामिल हो गया और समाज के लिए खतरा बन गया।

हम भी अपने जीवन के बारे में कई सपने देखे होंगे। अगर इसे पूरा करना है तो हमें खुद को कुम्हार के हवाले कर देना चाहिए। तभी हम एक सुंदर बर्तन में ढाले जा सकते हैं। यदि आप इसे दे देने में विफल रहते हैं, तो आप किसी के लिए भी दुषित और बेकार हो सकते हैं।

आज इस दुनिया में चमकने वाला हर बर्तन (व्यक्ति) इसलिए चमक रहा है, क्योंकि उन्होंने धैर्य और विनम्रता से खुद को कुम्हार के हाथों में सौंप दिया है।

इस दुनिया में जहाँ हम एक अस्थायी जीवन जीते हैं, शिक्षक मूर्तिकार हैं जो महान वैज्ञानिक, डॉक्टर, उपलब्धि हासिल करने वाले, कलाकार और कला विशेषज्ञ बनाते हैं। शिक्षक वो निर्माता है जो भविष्य के अगुवों और उपलब्धि हासिल करने वालों को बनाते हैं। कुछ इसे दायित्व समझ कर करते हैं, लेकिन कई इसे अपना मुख्य कर्तव्य मानते हैं और ईमानदारी और सच्चाई से सेवा करते हैं।

आज भी, जब आप अपने आप को अपने सर्वोच्च कुम्हार के आगे समर्पित करते हैं, तो वह आपको बेहतरीन तरीके से उत्तम आकार दे सकता है और आपको अपने सर्वोच्च कार्य करने के लिए उपयोग कर सकता है। इसलिए यदि कोई अपने आपको इनसे शुद्ध करेगा, तो वह आदर का बर्तन और पवित्र ठहरेगा, और स्वामी के काम आएगा, हर भले काम के लिए तैयार होगा। (2 तीमथियुस 2:21)।

प्रस्तावना

क्या आप खुद को
सौंपने के लिए तैयार हैं...

वह आपको साँचे में ढालने, परिवर्तित करने,
निर्मल करने और आशीष देने की
प्रतीक्षा कर रहा है।
समर्पित हों!! अधीन हों!!
उसकी सेवा करने के लिए !!

मसीह के मिशन में,
अविनाश

प्रार्थना की बेदारी

पिछले 7 महीनों से, हमने चर्चा की, '7 अलग-अलग क्षेत्रों में बेदारी लाने के लिए क्या किया जाना चाहिए? (7 पहाड़) और 'उन क्षेत्रों में बेदारी कैसे होती है?'

इस महीने के बाद, हम 7 प्रकार की बेदारी के बारे में बात करेंगे (प्रार्थना का बेदारी, शुद्धिकरण की बेदारी, शक्ति की बेदारी, उद्धार का बेदारी, शब्द का बेदारी, सुसमाचार प्रचार की बेदारी, और महिमा की बेदारी।) आइए हम इस महीने प्रार्थना बेदारी के बारे में चर्चा करें।

प्रार्थना बेदारी की मूल कुंजी है। बेदारी प्रार्थना से पैदा होती है और प्रार्थना से फैलती है। प्रार्थना की बेदारी केवल प्रार्थना करने वाले परमेश्वर के बच्चों द्वारा ही लाया जा सकती है। यीशु को इतने लंबे समय तक प्रार्थना करते हुए देखने के बाद हम यीशु के शिष्यों को उन्हें यह सिखाने के लिए कहते हुए देख सकते हैं कि प्रार्थना कैसे करें। प्रार्थना करने वाले ही दूसरों को प्रार्थना करने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। जॉन नॉक्स नामक परमेश्वर के एक व्यक्ति की प्रार्थना के माध्यम से परमेश्वर ने स्कॉटलैंड के राष्ट्र में एक महान बेदारी भेजी। जॉन नॉक्स हर दिन बड़ी पीड़ा और आँसुओं के साथ दिन-रात प्रार्थना करते थे, "प्रभु, मुझे स्कॉटलैंड दे दो, या मेरे प्राण ले लो।" प्रभु ने उनकी आँसुओं भरी प्रार्थना सुनी और स्कॉटलैंड को हिला दिया। 1561-64 के वर्षों के दौरान, क्वीन मैरी और जॉन नॉक्स के बीच तीखी बहस हुई। स्कॉट्स की रानी मैरी ने कहा, "मैं इंग्लैंड की सारी सेना से ज्यादा जॉन नॉक्स की प्रार्थनाओं से डरती हूँ।"



उसके द्वारा, परमेश्वर ने उस देश में प्रार्थना करने वाले लोगों की भीड़ को खड़ा किया। स्कॉटलैंड के राष्ट्र में उनके माध्यम से प्रार्थना का एक बड़ी बेदारी हुई। बड़ी भीड़ बचाई गई और चर्च में जोड़ दी गई। प्रभु ने हमारे देश में भी प्रार्थना की बेदारी को उठेलना शुरू कर दिया है। बच्चों, युवाओं, महिलाओं और पुरुषों ने कई घंटों तक चर्चों और प्रार्थना समूहों में एक साथ प्रार्थना करना शुरू कर दिया है जैसे पहले कभी नहीं किया। खासकर लॉकडाउन के दिनों के बाद किशोरों ने कांफ्रेंस कॉल्स, गूगल मीट, जूम आदि के जरिए घंटों प्रार्थना करनी शुरू कर दी है। प्रार्थना की बेदारी हमारी युवा पीढ़ी पर उठेली जा रही है। "और जब वे प्रार्थना कर चुके, तो वह जगह जहाँ वे बैठे थे हिल गया (प्रेरितों के काम 4:31)।" जब आप अपने समूहों में प्रार्थना करते हुए और अपनी व्यक्तिगत प्रार्थनाओं में परमेश्वर से प्रार्थना की बेदारी को आप पर डालने के लिए कहते हैं, तो आप पर बेदारी की आग उठेल दी जाएगी और वह स्थान जहाँ आप हैं, हिल जाएगा।

प्रिय युवा भाइयों और बहनों, यदि एक व्यक्ति की प्रार्थना पूरे राष्ट्र को उध्दार में ला सकती है, तो प्रभु निश्चित रूप से आपकी प्रार्थना सुनेंगे और हमारे भारत में बेदारी भेजेगे। आज प्रार्थना करना शुरू करें। अपनी प्रार्थनाओं से राष्ट्र को ढकें। प्रार्थना करने के लिए परिस्थितियों की तलाश मत करें। यीशु को देखें। भारत में बेदारी सुनिश्चित है!

परमेश्वर का उपयुक्त बर्तन



बहन निर्मला मैरी

बहन निर्मला मैरी के पिता ने उध्दार पा लिया था और उनकी मां रोमन कैथोलिक थीं। आइए हम बहन निर्मला मैरी से सुनें जो एक ऐसे परिवार में पैदा हुई थी, कि कैसे यीशु मसीह ने उन्हें बचाया और आज कई लोगों के लिए एक उपयोगी बर्तन के रूप में उनका उपयोग कर रहे हैं।

हमें अपने बचपन और परिवार के बारे में बताएं...

मेरा जन्म श्री सैमुअल मनोहर और श्रीमती डॉमिनिक सोरना अरोक्कियम के यहाँ इस दंपति की दूसरी बेटी के रूप में, तिरुनेलवेली जिले के पलायमकोट्टुई में हुआ था। मेरा एक भाई है जिसका नाम जोस इसहाक है। वह चेन्नई में काम करते हैं। मेरे पिता C.S.I कलीसिया के सदस्य थे। मेरी माँ रोमन कैथोलिक चर्च से ताल्लुक रखती थीं। बचपन से मेरी माँ हमें R.C. चर्च ले गईं और उस परंपरा में हमारा पालन-पोषण किया।

मैं हर हफ्ते नियमित रूप से चर्च जाती थी। लेकिन यीशु के साथ बिना किसी संबंध के रह रही थी।

मैं एक सांसारिक जीवन जी रही थी, जहाँ मैंने वचन नहीं पढ़े और प्रार्थना नहीं की। मेरा बचपन फिल्में देखने और सिनेमा के गाने

सुनने में बीता। जैसे ही मेरे पिता बच गए, उन्होंने मुझे शास्त्र पढ़ने और प्रार्थना करने के लिए कहा। लेकिन तब मैंने उसकी कभी नहीं सुनी।

ठीक है... आपने हमें अपने बचपन के बारे में बताया... अब अपनी पढ़ाई के बारे में बताएं।

मैं हमेशा स्कूल में शीर्ष तीन में से एक रही। मैंने निबंध लेखन, कविता और चित्रकारी प्रतियोगिता में पुरस्कार जीते हैं। लेकिन मेरे जीवन में शांति नहीं थी। यह समस्याओं और कष्टों से भरा था। मैं दोस्तों और दोस्ती के लिए तरसती थी।



लेकिन वहाँ केवल निराशा और आंसू थे। बचपन से मेरा कोई दोस्त नहीं है। कोई मुझसे कभी दोस्ती नहीं करता था, क्योंकि मेरे गुण उनसे मेल नहीं खाते।

आप अपनी पढ़ाई में अच्छी थी और यह अद्भुत है...!! आपने कहा था कि बचपन से आपका कोई दोस्त नहीं था.... आपको यीशु के बारे में कैसे पता चला?

चूंकि मेरे पिता बचाए गए थे और एक CSI चर्च से संबंधित थे, वे कहते हैं कि केवल यीशु ही परमेश्वर हैं और मूर्तियों की पूजा नहीं की जानी चाहिए। मेरे पिता रोज प्रार्थना करते हैं, जब से मैं एक बच्ची थी। जब से मैं छठी कक्षा में हुई, एक बहन जो हमारी पड़ोसी थी, मुझे आध्यात्मिक सभाओं और युवा सभाओं में ले जाती थी।

उन्हें वहाँ प्रार्थना करते देख मुझे बहुत आश्चर्य हुआ। मैंने आठवीं कक्षा से प्रार्थना करना और वचनों को पढ़ना शुरू कर दिया था। लेकिन मैं मुक्ति के बारे में कुछ नहीं जानती थी। मैंने सांसारिक जीवन जिया। 12वीं कक्षा तक मेरा आध्यात्मिक जीवन ऐसे ही चल रहा था।

ठीक है... आप यीशु को बचपन से जानती थीं... आप कब बचाई गई थीं? उसके बाद प्रभु ने आपके जीवन को कैसे बदल दिया?

मैं "जेबिकालम वंगा" शो मार्च 2020 में शुरू होने के बाद से देख रही हूँ। मैं मोहन अंकल के हर शब्द को ध्यान से सुनती हूँ। मैंने अप्रैल में यीशु को अपने व्यक्तिगत उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार किया। मैं उस समय बच गई, जब मैंने 11वीं कक्षा पूरी कर ली और 12वीं कक्षा में प्रवेश कर रही थी। मैं उलझन में थी कि 11वीं कक्षा में कौन सा समूह चुनूँ

और पढ़ूँ। मैंने अपने रिश्तेदारों के सुझाव के अनुसार मैथ्स-बायो ग्रुप से जुड़कर पढ़ाई शुरू की। मैंने 11वीं में 515 अंक हासिल किए।

मैं सोचती थी कि मैं 12वीं कक्षा में फेल हो जाऊँगी, लेकिन परमेश्वर की सहायता से मैं 563 अंक प्राप्त कर कक्षा में अव्वल छात्रा बन गई। मुझे वह सुख और शांति मिली जो मैंने खो दी थी।

जिस दिन से मैंने यीशु को अपना मित्र स्वीकार किया, उसी दिन से उन्होंने मुझे आध्यात्मिक मित्र भी दिए। इस से पहले मेरा कभी कोई दोस्त नहीं था। उसने हमारे परिवार को आशीष दी। परमेश्वर ने हमें देश और दूसरों के लिए प्रार्थना करने की कृपा दी है। उसने मेरे क्रोध और चिड़चिड़ापन जैसे बुरे स्वभाव को भी बदल दिया।

बढ़िया !! बहुत कुछ बदल गया है... बचाए जाने के बाद आपका आध्यात्मिक जीवन कैसा है??

मैं 2020 में बच गई थी। मैंने परमेश्वर की इच्छा को जानना और प्रार्थना करना सीखा। साल 2021 में मैंने 'रिवाइवल इग्नितर्स' कैम्प में हिस्सा लिया और अभिषेक प्राप्त किया। बाद में, परमेश्वर ने मुझे उसकी सेवा करने की इच्छा दी।

अब मैं हर हफ्ते ट्रेक्ट सेवा, सुसमाचार प्रचार की सेवा, ग्राम सेवा और युवाओं के बीच सेवा कर रही हूँ।

परमेश्वर मुझे कुछ चीजें प्रकट करते

हैं और उनके लिए प्रार्थना करने का बोझ देते हैं। मैं अपने साथी छात्रों को प्रचार कर रही हूँ।



उध्दार के शुरुआती दिनों से, मैं और मेरे दस दोस्त, जो यीशु को नहीं जानते थे, स्कूल में दोपहर के भोजन के दौरान हर दिन 15 मिनट के लिए प्रार्थना करते थे।

ज़बरदस्त!! तुम कहते हो कि तुम सुसमाचार प्रचार कर रही हो... अभी पढ़ाई में क्या कर रही हो??

मैं वर्तमान में ज़ेवियर कॉलेज, तिरुनेलवेली में B. Sc भौतिक शास्त्र के दूसरे वर्ष में हूँ। मैं 12वीं पास करने के बाद भौतिक शास्त्र लेना चाहती थी। लेकिन अपने रिश्तेदारों की सलाह पर मैंने गणित के लिए आवेदन किया। मैंने NEET की परीक्षा भी लिखी और परमेश्वर की इच्छा के आगे समर्पण कर दिया।

परमेश्वर की कृपा से मैंने उनकी इच्छा के अनुसार अपनी पसंद के कॉलेज में B. Sc भौतिक शास्त्र में दाखिला लिया। 6वीं से 12वीं कक्षा तक मेरा माध्यम तमिल था। कहा जाता था कि कॉलेज में

सब कुछ अंग्रेजी में पढ़ना होगा। यह थोड़ा डरावना था। अगर मुझे पाठों में कोई संदेह होता, तो मैं यीशु से पूछती। यीशु मुझे इस तरह से सिखाते हैं कि मैं समझ सकती हूँ।

परमेश्वर मुझे बुद्धि प्रदान कर रहे हैं और मुझे कॉलेज में अच्छे अंक प्राप्त करने और कक्षा में प्रथम आने के लिए मार्गदर्शन कर रहे हैं।

ठीक है... प्रभु ने आपको अच्छी तरह से अध्ययन करने के लिए अनुग्रह दिया है... कैसे आपने उन पापपूर्ण कार्यों पर विजय प्राप्त की, जो आप उध्दार पाने से पहले कर रहीं थीं?

शुरुआत में अनुचित विचार और फिल्में देखने की इच्छा जैसे कई प्रलोभन थे।

मैं अपने सभी पापों को स्वीकार करती और प्रार्थना करती। जिस दिन से मेरा अभिषेक किया गया था, उसी दिन से पवित्र आत्मा ने इन चीजों पर विजय पाने में मेरी सहायता की थी।

प्रतिदिन प्रातः काल में प्रार्थना करने से मेरा आध्यात्मिक जीवन सुदृढ़ होता गया।

यदि मैं एक दिन भी प्रार्थना करने में विफल होती हूँ, तो ऐसा लगता है कि मैंने कुछ खो दिया है। परमेश्वर मुझे हर दिन प्रार्थना करने, मजबूत होने और मेरे आध्यात्मिक जीवन में बढ़ने की कृपा दे रहे हैं। अब कोई पापपूर्ण संघर्ष मेरे पास नहीं आ सकता, क्योंकि परमेश्वर मुझे अपने लहू से धो रहे हैं और मेरी रक्षा कर रहे हैं।

उत्तम ... किशोरों से जो विभिन्न पापों से जूझ रहे आप उन्हें क्या कहना चाहती हैं?

जीवन में कई तरह की परेशानियाँ आ सकती हैं। उन्हें मत देखो, बस यीशु को देखो। यदि आप दुनियावी चीजों के गुलाम हैं, तो जब आप इसे यीशु के सामने स्वीकार करते हैं, तो प्रभु सब कुछ बदलने में सक्षम हैं।

जैसे यीशु ने मेरे स्वभाव को बदल दिया, वैसे ही वह आप में अवांछित चीजों को भी बदल देगा। जब आप स्वयं को यीशु की इच्छा के अधीन कर देते हैं, तो वह वही करेगा जो आपके लिए अच्छा है।

यदि मैं एक दिन भी प्रार्थना करने में विफल होती हूँ, तो ऐसा लगता है कि मैंने कुछ खो दिया है।

प्रिय युवाओं! यीशु ने बहन निर्मला को बचाया है जो अपने जीवन में सुख और शांति से रहित थी और उसे ऊंचा उठाया है। शायद, आप अपने दिल में खुशी और शांति के बिना, किसी तरह के पापपूर्ण आदतों से बाहर निकलने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। यदि हां, तो आज ही अपने पापों को परमेश्वर के सामने स्वीकार करें। परमेश्वर आपको ढालेगा और आपको स्वयं लिए एक उपयुक्त पात्र के रूप में उपयोग करेगा!

यदि मैं एक दिन भी प्रार्थना करने में विफल होती हूँ, तो ऐसा लगता है कि मैंने कुछ खो दिया है।



AMOS

प्रस्तावों के दुरुपयोग के लिए न्याय

प्रिय युवाओं! इस महीने आइए हम छोटे भविष्यवक्ताओं की किताबों में से तीसरी किताब, "आमोस की किताब" पर एक संक्षिप्त नज़र डालें।

परिचय

हालाँकि आमोस का पहला संदेश न्याय के बारे में था, वह इसे आशा के संदेश के साथ समाप्त करता है। प्रभु संसार के अधिपति हैं। वह उन लोगों का न्याय करने के लिए एक योद्धा के रूप में आएँगे जिन्होंने उसके अधिकार का विरोध किया था। वह उन इस्राएलियों को दण्ड देंगे जिन्होंने उसकी वाचा को तोड़ा। यारोबाम के समय में, जो सांसारिक इच्छाओं से भरा था, उत्तरी राज्य में पापों की भरमार थी। आमोस सिखाता है कि न्याय से बचने का एकमात्र तरीका पश्चाताप करना है।

लेखक : आमोस

समय काल : 755 - 760 ईपू

अध्याय : 9

आयतें : 146

शब्द : 4217

कुंजी भूमिका :

आमोस, यहूदा का राजा ज़िज़ियाह, इस्राएल का राजा यारोबाम।



आमोस का सारांश

- ▶ लेखक का विषय (1:1,2 आयतें)
- ▶ आमोस के 8 न्याय
- ▶ दमिश्क के ऊपर न्याय (1:3-5 आयतें)
- ▶ गाजा के ऊपर न्याय (1:6-8 आयतें)
- ▶ सूर के ऊपर न्याय (1:9-10 आयतें)
- ▶ एदोम के ऊपर न्याय (1:11-12 आयतें)
- ▶ अम्मोन के ऊपर न्याय (1:13-15 आयतें)
- ▶ मोआब के ऊपर न्याय (2:1-3 आयतें)

- ▶ यहूदा के ऊपर न्याय (2:4,5 आयतें)
- ▶ इस्राएल के ऊपर न्याय (2:6-16 आयतें)

आमोस का संदेश

- ▶ इस्राएल का न्याय (अध्याय 3)
- ▶ इस्राएलियों का पतन (अध्याय 4)
- ▶ इस्राएलियों के लिए विलाप (अध्याय 5,6)

आमोस के पांच दर्शन

- ▶ विनाशकारी टिड्डियों का दर्शन (7:1-3 आयतें)
- ▶ आग का दर्शन (7:4-6 आयतें)
- ▶ साहुल का दर्शन (7:7-9 आयतें)

इतिहास : बेतेल में याजकों का विरोध (7:7-10 आयतें)

- ▶ फलों की टोकरी का दर्शन (अध्याय 8)
- ▶ प्रभु के न्याय का दर्शन (9:1-10 आयतें)

इस्राएलियों के छुटकारे के लिए वायदे (9:11-15 आयतें)

आमोस में मसीह

इस पुस्तक में, आमोस मसीह को उस व्यक्ति के रूप में चित्रित करता है जो गिरे हुए तम्बू का पुनर्निर्माण करता है और अपने लोगों को उनके देश में पुनर्स्थापित करता है। आमोस पुस्तक को इस आशा के साथ समाप्त करता है कि इस्राएल फिर से बनाया जाएगा और दाऊद के गिरे हुए तम्बू को फिर से स्थापित किया जाएगा।

आमोस का जन्म यशायाह के जैसे शाही परिवार में नहीं हुआ था। न तो वह यिर्मयाह की तरह एक पुजारी के परिवार में पैदा हुआ। भले ही वह एक गरीब चरवाहा था, फिर भी वह शब्दों को बहादुरी से साझा करने में कभी नहीं हिचकिचाता था। परमेश्वर ने उसे लोगों को या अदालत को दे दिया। आमोस हमारे लिए एक उदाहरण है कि परमेश्वर किसी को भी किसी भी स्थान से उपयोग कर सकता है।

समर्पण करना...

मैं एक सेल्स कंपनी में लेखा विभाग में कार्यरत हूँ। मेरे मालिक ने नौकरी में मुझे तरकी दी, क्योंकि मैं काम में बहुत मेहनती और वफादार रहा हूँ; और अब मैं खजांची के रूप में काम कर रहा हूँ। जबकि, मैं एक तरफ अपने काम में वफादार और मेहनती हूँ; तो दूसरी ओर परमेश्वर के प्रति मेरे मन में जो भय और प्रेम है, उसके कारण मैं रविवार को ग्राम सेवकाई कर रहा हूँ।

अब, मैंने एक लड़की से शादी करने का फैसला किया है जो मेरी सहयोगी है।

लेकिन, मेरे माता-पिता और वो भाई जिन्होंने मेरा मार्गदर्शन किया और मुझे मसीह में ले गए, इस विवाह को मना करते हैं। वजह, की लड़की मुझसे दो साल बड़ी है। इसलिए मैं बहुत ज्यादा निराश हूँ। उम्र की वजह से उन्हें शादी से क्यों मना करना चाहिए? मैं इस वजह को स्वीकार नहीं कर पा रहा हूँ।

इसलिए आए दिन घर में परेशानी और गड़बड़ी मची हुई है। रविवार को मैं जो ग्राम सेवकाई करता हूँ वह भी बंद हो गया है। काम पर मेरी एकाग्रता कम हो रही है। मुझे नहीं पता क्या करना है। मेरे लिए ऐसा क्यों हो रहा है जो कि वफादार है? बहुत से लोग अपनी मर्जी से जीवन जीते हैं। उनके लिए कोई बाधा नहीं है। लेकिन, मेरे जीवन में और मेरे लिए ये रुकावटें क्यों हैं जो परमेश्वर के प्रति वफादार रहना चाहता है और उनके लिए अनुशासित जीवन जीना चाहता है?

- सुधाकर, सुरदाई।

प्यारे भाई सुधाकर!

नौकरी में आपकी वफादारी और नेकी को देखकर खुशी होती है। इसके अलावा, वफादारी और परिश्रम के साथ आपकी

प्रगति बहुत खुशी देती है। जहाँ बहुत से युवा हमेशा केवल यह सोचते हैं कि अपनी नौकरी में कैसे प्रगति की जाए, वहाँ रविवार



पुरुष परिवार को उत्तम ढंग से चला सकते हैं। यदि दोनों एक ही उम्र के हों या पति पत्नी से छोटा हो तो विवाद होने की संभावना

को परमेश्वर के लिए अंशकालिक सेवकाई करना वास्तव में एक महान कार्य और प्रयास है। इसके माध्यम से, परमेश्वर के लिए आपका प्रेम और उसके प्रति समर्पण अतुलनीय है।

साथ ही, कृपया विचार करें कि इस विवाह के संबंध में आपके निर्णय को हर कोई क्यों मना कर रहा है। वे उम्र को इतना महत्व क्यों देते हैं?

विवाह में दुल्हन की उम्र दूल्हे से कम होनी चाहिए। यह हमारे समाज का आदर्श है कि पुरुषों को महिलाओं से दो या तीन साल बड़ा होना चाहिए।

इसका कारण यह है, कि तभी, पुरुष परिवार को उत्तम ढंग से चला सकते हैं। यदि दोनों एक ही उम्र के हों या पति पत्नी से छोटा हो तो विवाद होने की संभावना



Heart Beat

अधिक होती है। इसलिए, वे कहते हैं कि महिलाओं को पुरुषों से छोटा होना चाहिए।

तभी महिलाओं के मन में अपने पति की बात मानने का विचार आएगा। अगर वे उम्र में बड़ी हैं, तो उन्हें लगता है कि वे अपने पति की तुलना में अधिक अनुभवी और जानकार हैं। यह परिवार के भीतर एकता की स्थिति में दरार पैदा करेगा। इसके अलावा, यह आज्ञा मानने और विनम्र होने में एक बड़ी बाधा का कारण बनता है।

आज की संस्कृति और परिवेश, इन आयु सीमाओं को नहीं मानते हैं। लोग समानता, आधुनिक सोच, नई संस्कृति और ऐसी कई चीजों की बात करते तो हैं। लेकिन, हकीकत में ये सभी चीजें कभी कारगर नहीं होतीं।

परिवार के भीतर प्रेम और शांति गायब हो जाएगी और इसके बजाय 'क्या मैं महान हूँ, या तुम महान हो?' और 'मैं सही हूँ और तुम गलत हो' जैसे शब्द गूँजेगे।

फिर भी, यदि आप उम्र के अंतर की परवाह किए बिना इस लड़की से शादी करते हैं, तो ये परिणाम होंगे।

- ▶ माता-पिता का आशीर्वाद और प्यार नहीं मिलने की प्रबल संभावना है।
- ▶ आपके आध्यात्मिक भाई के साथ संबंध टूटने के कारण, ग्राम सेवकाई हमेशा के लिए बंद हो सकती है और परमेश्वर के साथ आपका जो संबंध है वह प्रभावित हो सकता है।
- ▶ संभावना है कि आप आज जिस लड़की से आपकी बात मानने की उम्मीद करते हैं, वह भविष्य में आपकी अवज्ञा कर सकती है, और उसकी बातों और कामों से आपका दिल टूट सकता है।
- ▶ चूंकि वह आपसे बड़ी है, इसलिए वह आपसे यह कहकर बहस कर सकती है कि केवल, उसके तथ्य और प्रौढ़ सलाह ही सही हैं।

▶ यह अनबन दिनों के साथ और बढ़ सकती है और इस बात की भी संभावना है कि जिस लड़की को आप पसंद करते हैं वह आपको छोड़ के जा सकती है।

▶ इस अलगाव के कारण, हो सकता है आप थक जाएं और काम पर ध्यान केंद्रित करने में विशेष गिरावट आ जाए; जिस करके, आपकी नौकरी प्रभावित हो सकती है और आप अपनी नौकरी खो सकते हैं।



फिर भी, यदि आप उम्र के अंतर को देखते हुए इस विवाह को ना कहते हैं, तो लाभ हैं...

▶ जिस लड़की को आप पसंद करते हैं उससे शादी न करने से कुछ समय के लिए दर्द और दुख के साथ प्रभावित होने की संभावना है।

▶ फिर भी, चूंकि आपने अपने आप को वैवाहिक जीवन के लिए दिया है जो परमेश्वर को पसंद है, परमेश्वर आपको अपनी इच्छा के अनुसार एक लड़की दे सकते हैं।

▶ चूंकि वैवाहिक जीवन उत्तमता से चल रहा है, इसलिए काम में परिश्रम और सेवा करने में तीव्रता होगी।

▶ जैसा कि आपने अपने माता-पिता की बात मानी है, उनके दिलों में खुशी और आनंद होगा।

▶ इसके अलावा, आपको संतोष मिलेगा कि आप एक मसीह-केंद्रित परिवार का निर्माण कर रहे हैं जो परमेश्वर चाहते हैं।

इसलिए, सोचें और कार्य करें। आपका स्पष्ट निर्णय आपके पूरे जीवन के लिए जवाबदेही होता है। किसी भी निर्णय को बदलना हमारे हाथ में है। हालाँकि, विवाह का निर्णय लेने के बाद अपरिवर्तनीय है। इसलिए सोचें, प्रार्थना करें और फिर उसके अनुसार कार्य करें।

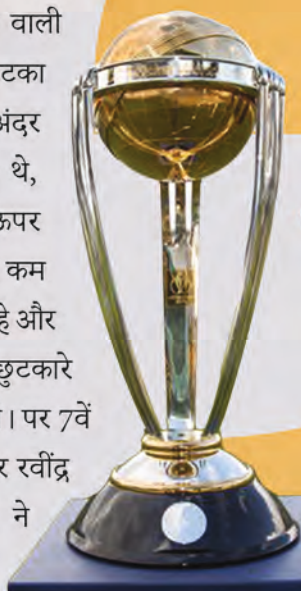
2019 वर्ल्ड कप सेमीफाइनल को भारतीय आसानी से नहीं भूल पाएंगे।

240 रनों के लक्ष्य के साथ अपने खेल की शुरुआत करने वाली भारतीय टीम को बड़ा झटका लगा। टीम ने 5 रन के अंदर ही 3 विकेट खो दिए थे, जिससे विश्व कप को ऊपर उठने की संभावना बहुत कम हो गई थी। विकेट गिरते रहे और स्कोर 92-6 था, जिससे छुटकारे की कोई उम्मीद नहीं बची। पर 7वें विकेट के लिए धोनी और रवींद्र जडेजा की साझेदारी ने तालिका को काफी हद तक उलट दिया,

क्योंकि यह M.S. ही थे जिन्होंने भारतीय टीम को कई बार जीत के कगार पर पहुंचाया।

इसलिए अभी भी उनका एक सपना था कि धोनी इस बार भारत के लिए वर्ल्ड कप जीतेंगे। लेकिन सभी को मायूसी मिली जब धोनी 216 रन पर आउट हो गए और विश्व कप का सपना चकनाचूर हो गया।

एक महान फुटबॉल खिलाड़ी बनने का सपना देखने वाले धोनी ने अपने स्कूल के दिनों में अपने स्कूल की फुटबॉल टीम में गोलकीपर के रूप में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। उन्होंने जिला मैचों में गोलकीपिंग में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर सभी का ध्यान खींचा। उनके फुटबॉल कोच, जो उन्हें हर समय देख रहे थे, ने कहा, "यदि आप



वह
आकार
देगा!

क्रिकेट
में विकेट कीपिंग
की कोशिश करें, तो

आपका भविष्य उज्ज्वल होगा!" फुटबॉल में सफल होने की महत्वाकांक्षा रखने वाले धोनी ने अपने कोच को अपने सपनों और भविष्य को आकार देने की अनुमति दी।

1998 में, वह बिहार राज्य क्रिकेट टीम में शामिल हुए और 2004 से भारतीय क्रिकेट टीम के लिए खेलना शुरू किया।

धोनी ने भारतीय क्रिकेट टीम को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ले जाने और भारत

को बड़ी सफलता दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 2004 से 2019 तक, उन्होंने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी के रूप में खेला और सभी का दिल जीता।



इसके अलावा वह 2008-2009 के लिए दो बार "आईसीसी एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी का पुरस्कार" जीतने वाले एकमात्र भारतीय खिलाड़ी हैं। उन्होंने राजीव गांधी खेल रत्न, पद्म श्री और पद्म विभूषण पुरस्कार भी जीते। हालांकि धोनी का सपना फुटबॉल की दुनिया में सर्वश्रेष्ठ गोलकीपर बनने का था, लेकिन उन्होंने अपने कोच की सलाह पर उन्हें अपना भविष्य बनाने का मौका दिया। इसलिए, वह इस तरह की ऊंचाई को हासिल करने में सक्षम थे।



अगर दुनिया में किसी व्यक्ति की सलाह के लिए खुद को समर्पित करना इतना बड़ा उत्थान ला सकता है, तो जब आप अपना जीवन प्रभु की सलाह के लिए समर्पित करते हैं, जिसने आपको बनाया है, तो वह आपको सभी के लिए एक उपयोगी बर्तन बना देगा। आपकी महत्वाकांक्षाएं धोनी जितनी बड़ी हो सकती हैं, लेकिन उन्हें हासिल करने के लिए संघर्ष कर रहे हैं, या शायद टूटे और डरे हुए हैं।

कोई बात नहीं, अपना जीवन उसे समर्पित कर दो और वह तुम्हें ढालेगा और बना देगा। क्या आप यह सोचकर चिंतित

हैं, 'क्या मेरा पतित जीवन फिर से उन्नति करेगा?' 'क्या मेरा बिगड़ा हुआ जीवन फिर से बनाया जा सकता है?'

एक अच्छा कुम्हार बिगड़ी हुई मिट्टी को फेंकता नहीं है, बल्कि उसे अपने हाथ में लेता है और उपयोगी बर्तन में बदल देता है। इसी तरह, प्रभु आपके टूटे हुए जीवन को बहाल कर सकते हैं।

जब दाऊद ने पाप किया और अपने जीवन को बिगाड़ डाला, तो परमेश्वर ने उसे नाश होने के लिए नहीं छोड़ा। उसने नातान को दाऊद के पास उसकी गलतियों को बताने के लिए भेजा। दाऊद को अपनी गलतियों का एहसास हुआ और उसने कहा, "मैंने यहोवा के विरुद्ध पाप किया है।" (2 शमूएल 12:13)। एक बार जब दाऊद ने अपनी गलती के लिए पश्चाताप किया, तो परमेश्वर ने उसके बिगड़े जीवन का पुनर्निर्माण किया। जब आप अपने पिछले पापपूर्ण जीवन के बारे में चिंता करना छोड़ देते हैं, और दाऊद की तरह अपनी गलतियों को महसूस करते हैं और खुद को ढालने और बनाने के लिए प्रभु के हवाले कर देते हैं, तो वह आपके जीवन का पुनर्निर्माण कर सकता है।

मेरे प्रिय युवाओं, जब आप अपने आप को परमेश्वर के हाथों में सौंप देते हैं कि आप उनकी इच्छा के अनुसार ढाले जा सकें, एक स्वयं निर्धारित लक्ष्य नहीं बनाते हैं और न उसकी ओर दौड़ते हैं, अपने बर्बाद जीवन की चिंता किये बिना, जैसे एक मिट्टी कुम्हार के हाथों में खुद को सौंप देती है, तो वह आपको बड़े उपयोग और सम्मान के पाल के रूप में ढालेगा !!

चीजें जो परमेश्वर को प्रसन्न करती हैं

"मुझे सिखा कि मैं तेरी इच्छा कैसे पूरी करूँ।"

(भजन. 143:10)

कई बार हम परमेश्वर से वह सब मांगते हैं जो हमें अच्छा लगता है। परमेश्वर हमारी प्रार्थनाएँ सुनते हैं, हमारी इच्छाओं पर ध्यान देते हैं और हमारे अनुरोधों को पूरा करते हैं। लेकिन दाऊद ने परमेश्वर से एक सुंदर प्रार्थना की 'मुझे सिखा कि मैं तेरी इच्छा कैसे पूरी करूँ।' जिसका अर्थ है 'मैं वही करना पसंद करूँगा जो आपको पसंद है।' दाऊद के जीवन के हर उदाहरण में, हम देखते हैं कि दाऊद यहोवा से पूछता है, 'क्या मैं यह युद्ध कर सकता हूँ?' 'क्या मैं जाऊँ?' 'क्या मैं कोई विशेष प्रयास कर सकता हूँ?' और परमेश्वर की इच्छा और मनसा को जानकर उसके अनुसार कार्य करता है। इसलिए परमेश्वर ने उसे 'एक मनुष्य, मेरे अपने मन के अनुसार' के रूप में स्वीकार किया (प्रेरितों के काम 13:22)। हमें भी वही करने पर ध्यान देना चाहिए जो उसे अच्छा लगता है। आइए हम उन चार बातों पर मनन करें जिनकी परमेश्वर हमसे अपेक्षा करता है।

विश्वास रखना

"और विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है; क्योंकि परमेश्वर के पास आने वाले को विश्वास करना चाहिए कि वह है, और अपने खोजनेवालों को प्रतिफल देता है।" (इब्र. 11:6)। विश्वास परमेश्वर को प्रसन्न करता है और यह उसे खुश करता है।

जब हम मत्ती 8 में सुबेदार के बारे में पढ़ते हैं, तो वह यीशु के पास आया और उससे अपने सेवक के बारे में प्रार्थना की जो घर पर लकवा के कारण बहुत पीड़ित था।

जब यीशु ने कहा, कि वह आकर उसे चंगा करेगा, तब सुबेदार ने उत्तर दिया, "हे प्रभु, मैं इस योग्य नहीं कि तू मेरी छत के नीचे आए। परन्तु केवल एक शब्द कह दे, तो मेरा दास चंगा हो जाएगा।" जब यीशु ने यह सुना, तो वह चकित हुआ और अपने पीछे आने वालों से कहा, "मैं तुम से सच

कहता हूँ, कि मैंने इस्राएल में भी नहीं ऐसा बड़ा विश्वास नहीं पाया!" क्या आप में ऐसा विश्वास है?

दूसरों के लिए प्रार्थना करना

"अब मैं सबसे पहले यह आग्रह करता हूँ कि विनती, और प्रार्थना, और निवेदन, और धन्यवाद सब मनुष्यों के लिए किए जाएं (1 तीमु. 2:1)।" इतना ही नहीं, शास्त्र हमें ऊँचे पदों में रहने वालों के लिए प्रार्थना करने के लिए कहता है ताकि देश में शांति, सेहत और सदाचार बना रहे। यह एक ऐसी बात है जो परमेश्वर को प्रसन्न करती है। "राजाओं और सब ऊँचे पदवालों के निमित्त इसलिये कि हम विश्राम और चैन के साथ सारी भक्ति और गम्भीरता से जीवन बिताएं। यह हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर को अच्छा लगता और भाता भी है (1 तीमु. 2:2,3)।" हम में से कितने लोग अपने मुख्यमंत्री, कैबिनेट मंत्रियों, कलेक्टर, तहसीलदार, एस.पी. और न्यायपालिका में न्यायाधीशों के लिए प्रार्थना कर रहे हैं? हम में से अधिकांश 99% अपनी नौकरी, परिवारों और पोते-पोतियों के लिए आत्मकेंद्रित प्रार्थनाओं पर ध्यान देते हैं। क्या आप अपने सहपाठियों के लिए प्रार्थना करते हैं? क्या आप अपने साथियों के उद्धार के लिए प्रार्थना करते हैं? क्या आप अपने पड़ोस और अपने जिले के निवासियों के लिए प्रार्थना करते हैं? परमेश्वर हमें सभी के लिए प्रार्थना करने का आग्रह करते हैं।



चूँकि हम, मसीही प्रार्थना करने में विफल रहे, परमेश्वर की अपने सभी लोगों के लिए मुक्ति की योजना में देरी हो रही है। जब हर उद्धार पाया हुआ मसीही इस वचन के अनुसार प्रार्थना करेगा, तो हमारे राष्ट्र में महान बेदारी आएगी। हम वह करने में असफल रहे हैं जो परमेश्वर को प्रसन्न करता है। हम इतने बड़े प्रभाव का सामना इसलिए कर रहे हैं, क्योंकि आपने और मैंने कुछ ऐसा किया है जो परमेश्वर को खुश नहीं करता है।

हर्ष से देना

"हर एक जन जैसा मन में ठाने वैसा ही दान करे; न कुछ कुढ़ के और न दबाव से, क्योंकि परमेश्वर हर्ष से देनेवाले से प्रेम रखता है (2 कुरिन्थियों 9:7)।" जब यीशु मन्दिर में गया, तो वह मन्दिर के भण्डार के पास बैठा गया और लोगों को अपना दान डालते देखा। कई धनी लोगों ने बड़ी माता में फेंका। लेकिन एक गरीब विधवा ने आकर दो बहुत छोटे ताबे के सिक्के डाल दिए, जिनकी कीमत केवल कुछ पैसे की थी।

यीशु ने अपने चेलों को अपने पास बुलाते हुए कहा, "मैं तुम से सच कहता हूँ, कि इस कंगाल विधवा ने उन सब से बढ़कर डाला है, जिन्होंने भण्डार में दिया है; जब उन्होंने पूछा कि कैसे प्रभु? उसने कहा, क्योंकि उन सब ने अपनी बढ़ती में कुछ दान डाला है, परन्तु उसने अपनी घटी में से अपना सब कुछ, अपनी सारी जीविका डाल दी है।" यह दस हजार रुपये हाथ में रखते हुए 10 रुपये देने जैसा है।

लेकिन इस विधवा के पास सिर्फ 2 सिक्के थे और उसके पास जो कुछ भी था उसने डाल दिया। उसने सब कुछ दूर रख दिया। उसने अपने प्रभु के लिए प्रेम से भेंट चढ़ायी, जिसने उसे जीवित रखा और अब तक उसकी रक्षा की थी। उसने दायित्व के लिए, या प्रसिद्धि के लिए नहीं बल्कि प्रेम के लिए दिया। हम परमेश्वर को कैसे देते हैं? प्रभु यह देखते हैं कि हम उसके लिए प्रेम से देते हैं या दायित्व के कारण। हमारे देने के पीछे परमेश्वर हमारे इरादों को देखते हैं। हम जैसा देते हैं उसके अनुसार परमेश्वर हमें आशीष देते हैं।

भले कामों को करना

भलाई करना और उदारता दिखाना न भूलो, क्योंकि परमेश्वर ऐसे बलिदानों से प्रसन्न होता है (इब्रानियों 13:16)। यीशु भलाई करता फिरा। उन्होंने जरूरतमंद लोगों की मदद की। हम जो मसीह का अनुसरण करते हैं, उन्हें भी अच्छा करना चाहिए और दूसरों की भलाई करनी चाहिए।



हम बाइबल में कुरनेलियुस नाम के एक व्यक्ति के बारे में पढ़ते हैं। "वह भक्त था, और अपने सारे घराने समेत परमेश्वर से डरता था, और यहूदी लोगों को बहुत दान देता, और बराबर परमेश्वर से प्रार्थना करता था (प्रेरितों के काम 10:2)।" लेकिन कुरनेलियुस अभी तक उद्धार नहीं पाया था। वह केवल इतना जानता था कि एक परमेश्वर है।

वह अपने सारे घराने को परमेश्वर के भय में चला रहा था, हमेशा प्रार्थना करता था और बहुत दान करता था। लेकिन एक दिन, उसकी प्रार्थनाएँ और कैसरिया शहर से गरीबों के लिए किए गए दान परमेश्वर के आगे स्मरण के लिए स्वर्ग तक पहुँच गए। परमेश्वर उसके प्रति सचेत था कि वह बचाया जाए और उसका अभिषेक किया जाए। इसलिए, उसने इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए एक स्वर्गदूत को कुरनेलियुस के पास भेजा। कुरनेलियुस ने डर के मारे उसकी ओर देखा और पूछा, "हे प्रभु, क्या है?" स्वर्गदूत ने कहा, "तेरी प्रार्थनाएँ और तेरे दान स्मरण के लिए परमेश्वर के सामने पहुँचे हैं (प्रेरितों के काम 10:4)।" 2 चीजें हैं जो स्मरण के लिए में स्वर्ग तक पहुँचती हैं - पहली, वह प्रार्थनाएँ जो आप प्रार्थना करते हैं। यह ऐसी प्रार्थना होनी चाहिए जिसे हम वचन के अनुसार करते हैं। दूसरा, उदारता का दान। जब हम एक विधवा, एक गरीब बच्चे, समाज में पीड़ित व्यक्ति की मदद करने के लिए आगे बढ़ते हैं, तो यह स्वर्ग में परमेश्वर के आगे यादगारी के रूप में पहुँच जाता है।

प्रिय युवाओं! दाऊद की तरह, हम अपने सभी प्रयासों में सफलता पा सकते हैं, जब हम प्रार्थना करते हैं और ऐसे काम करते हैं जो परमेश्वर को उसकी इच्छा के अनुसार प्रसन्न करते हैं।

चूँकि दाऊद ने किसी भी कार्य को करने से पहले प्रभु से पूछताछ की थी, उसे 'परमेश्वर के अपने मन के अनुसार मनुष्य' कहा गया था। क्या परमेश्वर आपके बारे में उसी तरह गवाही दे सकते हैं जैसे 'मेरे प्यारे बच्चे जो मेरे दिल के अनुसार हैं?' वही करने की कोशिश करो जो परमेश्वर को भाता है। परमेश्वर आपके बारे में गवाही देगा!



आइए हम प्रार्थना करें और जीते!

आदर्श प्रार्थना: लेवियों की प्रार्थना

जैसा कि हम प्रार्थना के महत्व को सीखना जारी रखते हैं, इस महीने हम उस विशेष प्रार्थना को सीखने जा रहे हैं जो लेवियों ने नहेम्याह की पुस्तक में की थी। यदि हम नहेम्याह 9:38 पर मनन करने के लिए समय निकालें, तो कई अद्भुत शब्द हैं जिन्हें हमारी प्रार्थनाओं में शामिल किया जा सकता है।

"तू ही अकेला यहोवा है; स्वर्ग वरन् सब से उंचे स्वर्ग और उसके सब गण, और पृथ्वी और जो कुछ उसमें है, और समुद्र और जो कुछ उसमें है, सभी को तू ही ने बनाया, और सभी की रक्षा तू ही करता है; और स्वर्ग की समस्त सेना तुझी को दण्डवत् करती है।" (नहेम्याह 9:6)।

लेवियों के ये सब वचन हमें स्मरण दिलाते हैं कि हमारा प्रभु कौन है।

► साथ ही, वो ही है जो हमारा पालन-पोषण करता और हमें संभालता है; और जब हम यह घोषणा करते हैं कि सब कुछ सर्वशक्तिमान के अधीन है, तो हम उसके सामने नम्र हो जाते हैं।

► लेकिन क्या हम, परमेश्वर से जोंकों की तरह "दे... दे..." करके वह सब मांगते हैं जो हम चाहते हैं?

जब हम निम्नलिखित टिप्पणियों को नियमित रूप से पढ़ते हैं और उन्हें अपनी व्यक्तिगत प्रार्थनाओं में शामिल करते हैं, तो हमारी प्रार्थना निश्चित रूप से बदल जाएगी।

1. वह जिसने हमें चुना। (नहेम्याह 9:7)
2. वह जो विश्वासयोग्य हृदय को पहचानता है। (नहेम्याह 9:8)
3. वह जो हम से वाचा बान्धता है। (नहेम्याह 9:8)
4. वह जो गरीबों और जरूरतमंदों की देखरेख करता है। (नहेम्याह 9:9)
5. वह जो हमारी पुकार सुनता और हमारी सहायता करता है। (नहेम्याह 9:9)
6. वह जो चिन्ह और चमत्कार करता है। (नहेम्याह 9:10)
7. वह जो चलने की राह दिखाता है। (नहेम्याह 9:12)
8. वह जो उचित विधियों और सच्चे कानूनों, अच्छे नियमों और आज्ञाओं को देता है। (नहेम्याह 9:13)
9. वह जो यही सिखाता भी है। (नहेम्याह 9:14)
10. वह जो इस दुनिया की जरूरतों को पूरा करता है। (नहेम्याह 9:15)

11. वह क्षमा करने वाला परमेश्वर है, जो पीछे हो गए उनको भी क्षमा करता है, क्षमा करने को तत्पर, अनुग्रहकारी और दयालु, विलम्ब से कोप करने वाला, अति करुणामय, और अपने लोगों को कभी न त्यागने वाला परमेश्वर है। (नहेम्याह 9:17)

12. एक साथी जो हमें कभी नहीं छोड़ता। (नहेम्याह 9:19)

13. उसने हमें पवित्र आत्मा दिया है जो डांटता और निर्देश देता है। (नहेम्याह 9:20)

14. वह जो विशेष रूप से देखभाल करता है। (नहेम्याह 9:21)

15. वह जो दूसरों के द्वारा हम पर कृपा करता है। (नहेम्याह 9:23,24)

16. जब हम बार-बार गिरते हैं, तब भी वह हमें उठाता है। वह जिसने अपनी दया के अनुसार पहले भी हमें कई बार छुड़ाया है। (नहेम्याह 9:28)

17. वह जो डांटता है लेकिन धीरज रखता है। (नहेम्याह 9:30)

18. वह जो हम पर अपनी असीम कृपा उडेलता है, कि हम नाश न हों। (नहेम्याह 9:31)

19. वह एक पराक्रमी और भय योग्य परमेश्वर है जो कृपा से हमारे साथ अपनी वाचा रखता है। इसलिए, हमारे किसी भी दुख को उसके सामने तुच्छ नहीं माना जाता है। (नहेम्याह 9:32)

20. वह जो हमारे श्रम को कभी व्यर्थ नहीं जाने देता। (नहेम्याह 9:37)

प्रार्थना में ऐसी बहुत सी बातें हैं। आज हमारा उद्देश्य उन्हें अपनी प्रार्थनाओं में विनती, स्तुति, नम्रता और धन्यवाद के रूप में शामिल करना है।

प्रिय युवाओं !!

क्या आप लोग प्रभु की इच्छा के अनुसार इस तरह से प्रार्थना करने के लिए तैयार हैं!!

ढाले जाने के लिए समर्पण करें

मेरे प्यारे भाइयों और बहनों! परमेश्वर के बच्चों के रूप में, क्या आपने कभी सोचा है, 'मेरे जीवन में क्या चल रहा है? मैं ऐसे क्यों रहता हूँ? मैं समय-समय पर पाप में क्यों पड़ जाता हूँ? परमेश्वर मेरी प्रार्थना का जवाब क्यों नहीं देते?' क्या आपने मेरे दिल में ऐसे सवाल कई बार पूछे हैं। जी हाँ दोस्तों, हमारे जीवन में कुछ हालात ऐसे होते हैं जो अपने आप पैदा हो जाते हैं। कुछ परिस्थितियाँ ऐसी होती हैं जो दूसरों के फैसलों से निर्मित होती हैं। विशेष रूप से, अधिक परिस्थितियाँ ऐसी होती हैं जो उन फैसलों के कारण होती हैं जो हम देह की वासना द्वारा खींच कर स्वयं करते हैं। जब हम ऐसी परिस्थितियों का सामना करते हैं, तो हमारे ऊपर वर्णित प्रश्न उठते हैं और कभी-कभी हमें यह भी संदेह होता है कि प्रभु हमारे साथ हैं या नहीं।

आइए हम वचनों से कुछ उदाहरणों के साथ देखें कि जब हम इतने कठिन रास्ते से गुजरते हैं तो परमेश्वर हम में क्या करते हैं।

" जो मिट्टी का बर्तन वह बना रहा था वह बिगड़ गया, तब उसने उसी का दूसरा बर्तन अपनी समझ के अनुसार बना दिया।" (यिर्मयाह 18:4)। कुम्हार परमेश्वर को संदर्भित करता है। बर्तन हमें संदर्भित करते हैं। वचन कहता है कि कुम्हार के हाथ में घड़ा बिगड़ गया था। हाँ, कई बार हम उसी स्वतंत्रता का उपयोग जो परमेश्वर ने हमें दी है, अपनी शारीरिक इच्छाओं को पूरा करने के लिए करते हैं। जब हम ऐसा करते हैं, तो हम अपने लिए कुछ मुश्किल स्थितियाँ पैदा कर लेते हैं। फिर हम परमेश्वर से सवाल करना शुरू करते हैं। हमारे द्वारा लिए गए गलत फैसलों के अलावा, कभी-कभी दूसरों द्वारा हमें मुश्किल परिस्थितियों में डाल दिया जाता है।

उदाहरण के लिए, पवित्रशास्त्र में, यूसुफ को अपने भाइयों की बुरी सलाह के कारण बहुत कष्ट उठाना पड़ा।

मेरे प्यारे नौजवानों, यदि आप वर्तमान में शायद आपके द्वारा किए गए गलत फैसलों के कारण जीवन में कष्ट उठा रहे हैं, तो पश्चाताप करें और अपने आप को नम्र करें और प्रभु यीशु मसीह के निकट आएँ। वह अपने पास आने वाले किसी को भी नहीं छोड़ता। परमेश्वर आपको आपकी परिस्थितियों के माध्यम से आकार देते हैं। कभी-कभी, हमें यह एहसास भी नहीं होता कि वह हमारे भीतर काम कर रहा है। " यद्यपि तुम लोगों ने मेरे लिए बुराई का विचार किया था; परन्तु परमेश्वर ने उसी बात में भलाई का विचार किया, जैसा आज के दिन प्रगट है, कि बहुत से लोगों के प्राण बचे हैं (उत्पत्ति 50:20)। "किसी दिन, हम भी यह कह सकेंगे, जैसा यूसुफ ने अपने भाइयों से कहा था।

बाइबल कहती है, " हम जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को

उत्पन्न करती है; अर्थात् उन्हीं के लिये जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं (रोमियो 8:28)। "जब हम स्वयं को उसकी इच्छा के अधीन कर देते हैं और उससे प्रेम करते हैं, चाहे हम किसी भी कठिन परिस्थिति से गुज़रें, गहराई से याद रखें कि वह हमें सम्मान और महिमा के एक अच्छे

बर्तन में ढाल रहा है और आकार दे रहा है। उस पर भरोसा करें और आगे बढ़ें। यहोवा आपको अपने लिए उपयुक्त पाल के रूप में ढालेगा और उपयोग करेगा!





नमस्कार मित्रों! आप सभी को मेरा अभिवादन। इस तेजी से भागती दुनिया में, आप खुद को सफल होने या खुद को साबित करने के लिए तैयार कर रहे होंगे। आपको जीत की यात्रा के लिए प्रोत्साहित करने के लिए, यहां एक उपलब्धि हासिल करने वाले की कहानी है। मुझे उम्मीद है कि इस उपलब्धि हासिल करने वाले का जीवन आपको बहुत प्रेरित करेगा। फिल नाइट संयुक्त राज्य अमेरिका में एक ट्रैक एथलीट थे। ओरेगन विश्वविद्यालय में, वह कोच बिल बोमरन के संपर्क में आए। बोमरन को अपने धावकों के जूते को अनुकूलित करने का मोह था। एक स्थानीय मोची से सीखने के बाद लगातार विभिन्न मॉडलों के साथ छेड़छाड़ करते थे। बोमरन ने फिल के जूते में से एक लिया और उन्हें अपने अनुकूलित डिजाइन के साथ ठीक किया। फिल को अनुकूलित डिजाइन बहुत पसंद आया, और, जूतों ने इतनी अच्छी तरह से काम किया कि उनकी टीम के साथी ओटिस डेविस ने

विजयी होकर चयन

उन्हें ले लिया और 1960 के ओलंपिक में 400 मीटर डैश में स्वर्ण पदक जीत लिया।

ओरेगन विश्वविद्यालय के बाद, फिल ने स्टैनफोर्ड से व्यवसाय प्रशासन में मास्टर डिग्री के साथ स्नातक किया।

अपनी मास्टर डिग्री के दौरान, उन्होंने यह सिद्धांत देते हुए एक पेपर लिखा था कि चलने वाले जूते का उत्पादन जर्मनी में अपने वर्तमान केंद्र से जापान में जाना चाहिए, जहां श्रम सस्ता था।

यहां तक कि उन्हें 1962 के स्नातक होने के तुरंत बाद, जापान की यात्रा के साथ, इस सिद्धांत को परीक्षण करने का मौका मिला। उन्होंने जापानी व्यापारियों के एक समूह के साथ देश के लोकप्रिय टाइगर जूतों को अमेरिका में निर्यात करने के लिए एक सौदा किया। दौड़ने के लिए अपने प्यार और अपने नए अर्जित व्यावसायिक कौशल को मिलाकर, अपने कोच बिल



बोमरन के साथ, फिल ने ब्लू रिबन स्पोर्ट्स (बीआरएस) नामक अपनी जूतों की कंपनी लॉन्च की जो जापान से

अमेरिकी बाजार में उच्च गुणवत्ता और कम मूल्य के दौड़ने वाले जूते आयात करें।

कंपनी शुरू में जापानी जूता निर्माता ओनित्सुका टाइगर (अब ASICS) के वितरक के रूप में काम करती थी। यह फिल और बोमरन के बीच 50-50 का व्यापारिक सौदा था। उन्होंने अमेरिका में मौजूदा जूता स्टोर के माध्यम से अपने जूते बेचने की कोशिश की। लेकिन कोई



भी दुकान उनके आयातित जूते खरीदने के लिए आगे नहीं आई। उन्होंने कई दुकानों का दौरा किया, लेकिन उनके प्रयास केवल व्यर्थ थे। उन्होंने अपना सारा पैसा खर्च कर दिया। यह सोचकर कि आगे क्या करना है, उनके मन में एक विचार आया और वे उस पर अमल करने लगे। फिल और उनके कोच ने अपने सभी जूते एक कार में लाद दिए और स्टेडियम में पहुंचे जहां खेल आयोजन हुए। उन्होंने सभी स्पोर्ट्स शूज को कार की डिक्की में बड़ी सफाई



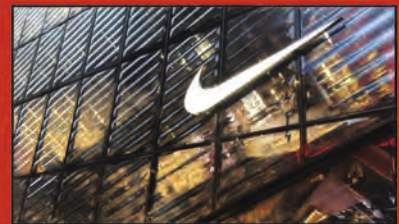
से रखा और बिक्री के लिए रख दिया। इस विचार का लोगों ने गर्मजोशी से स्वागत किया और इसे बढ़िया तरीके से ग्रहण किया। 1964 में, अपने पहले साल के कारोबार में, BRS ने 8000 डॉलर की कमाई के साथ 1,300 जोड़ी जापानी दौड़ने वाले जूते बेचे।

1966 में, BRS ने अपना पहला रिटेल स्टोर खोला। 1967 में, तेजी से बढ़ती बिक्री के कारण, BRS ने अपने रिटेल और वितरण



कार्यों का विस्तार किया। 1971 तक, BRS और जापानी जूता निर्माता ओनित्सुका टाइगर के बीच संबंध समाप्त होने के करीब थे। BRS फुटबियर की अपनी लाइन लॉन्च करने की तैयारी में थे। उन्होंने अपने खुद के एथलेटिक जूते बनाना शुरू कर दिया जो हल्के और उस आकार में थे जो एथलीट चाहते थे। फिल नाइट ने अपने जूते बनाने के लिए मेक्सिको में एक जूता कारखाने को चुना।

कंपनी ने 1978 में अपना नाम ब्लू रिबन स्पोर्ट्स (BRS) से बदलकर नाइकी कर लिया। नाइकी कंपनी अब एक पसंदीदा स्पोर्ट्स मैटेरियल कंपनी बन गई है। लगन, कड़ी मेहनत और अथक दिमाग ही वो सभी कारण हैं जिनकी वजह से



नाइकी इतनी बड़ी कंपनी बन गई है।

प्रिय युवा विजेताओं! यदि आप विजयी होना चाहते हैं, तो आपको अपने खिलाफ आने वाले संघर्षों का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए। तभी आप तरक्की कर पाएंगे। यदि आप अपने रास्ते में आने वाली समस्याओं का सामना नहीं कर सकते हैं, तो आप सफल नहीं हो पाएंगे। जैसे एक जहाज करता है, आपको भी समुद्र को चीरने की जरूरत है। तभी तुम किनारे तक पहुंच सकते हो। इसलिए, जब आप सभी डर और निराशाओं का विरोध करते हैं, तो आप विजयी होकर चल सकते हैं।

लोग जो ढाले जाने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

एलशिया



इससे पहले कि परमेश्वर ने एलीशा को एलिय्याह के माध्यम से अपने मिशन के लिए बुलाया, कोई भी एलीशा के बारे में ज्यादा नहीं जानता था। हम सभी जानते हैं कि वह एक किसान था। यहोवा ने एलिय्याह से कहा कि उसके स्थान पर एक भविष्यद्वक्ता खड़ा करे। जब एलीशा अपने सेवकों के संग बारह जोड़ी बैल अपने साम्हने हल जोत रहा था, और वह बारहवें के संग रहा, तब एलिय्याह उसके पास से होकर चला, और अपना अंगरखा उस पर डाल दिया। इसलिए एलीशा ने उस बुलाहट को जान लिया जो उसे मिली थी और उसने लोगों के लिए एक भोज किया। एलीशा कोई साधारण आदमी नहीं था, लेकिन हो सकता है कि वह एक बहुत धनी व्यक्ति रहा हो, जिसके पास बहुत सारी भूमि थी। जब उसे परमेश्वर की सेवा करने का बुलावा मिला, तो वह यूँ ही चला नहीं गया। उसने अपने माता-पिता को सूचित किया, उन्हें चूमा और अलविदा कह दिया, सब कुछ पीछे छोड़ दिया और प्रभु का अनुसरण किया, यह जानते हुए कि परमेश्वर उसकी अगुवाई करने के लिए शक्तिशाली हैं। जब उसने सेवकाई में कदम रखा, तो उसने सबसे पहले एलिय्याह की सेवा की। एलीशा ने एलिय्याह से सेवकाई करना सीखा। एलिय्याह ने एलीशा को अपने साथ रखा और वह एलीशा को ढालने का कारण था। एलीशा जो एलिय्याह का अनुसरण करता था, उसके बाद उसे दोगुने आत्मिक वरदान मिले और उसने एलिय्याह की तुलना में दोगुने चमत्कार किए। हर बार जब एलिय्याह अलग-अलग जगहों की यात्रा करता था, तो उसने एलीशा को वहीं रहने के लिए कहा, लेकिन एलीशा ने कहा कि वह उसे नहीं छोड़ेगा और वह जहाँ भी गया, एलिय्याह का पीछा किया।

जब वे यरदन में आए, तब एलिय्याह ने एलीशा से पूछा, "मैं तेरे लिये क्या करूँ, इस से पहले कि मैं तुझ से दूर न हो जाऊँ?" एलीशा ने कहा, "कृपया अपनी आत्मा का दोगुना भाग मुझे दें।" एलिय्याह ने कहा, यदि तुम मुझे अपने पास से उठा लिए जाने के समय देख लेगा, तो तुम्हारे लिये ऐसा ही होगा; परन्तु यदि नहीं, तो ऐसा न होगा।" और जब वे चलते चलते बातें करते थे, तो एकाएक आग के घोड़ों सहित एक अग्रिमय रथ प्रकट हुआ, और उन दोनों को अलग कर दिया; और एलिय्याह बवंडर से होकर स्वर्ग पर चढ़ गया।

(2 राजा 2:1-18)

प्रिय युवाओं! एलिय्याह ने परमेश्वर के निर्देशों का पालन किया और एलीशा को भविष्यद्वक्ता के रूप में ढाला।

एलीशा ने खुद को परमेश्वर की योजना के अनुसार ढाले जाने के लिए प्रतिबद्ध किया, की वो एलियाह की तुलना में दोगुने बड़े चमत्कार करे। क्या आप परमेश्वर की योजना के अनुसार खुद को एलीशा की तरह ढालने के लिए प्रतिबद्ध होंगे?

यहोशू

जैसे ही मूसा अपनी मृत्यु के निकट आया, मूसा ने परमेश्वर से उसके बाद एक अगुवा बनाने के लिए कहा ताकि इस्राएली बिना चरवाहे के झुंड के समान न हों। और परमेश्वर ने उस से यहोशू को, जिस में आत्मा है, नियुक्त करने को कहा, और उस से बिनती की, कि मण्डली के साम्हने खड़ा होकर उसको प्रधान ठहराए। यहोवा ने यहोशू के बारे में सिफारिश करते हुए मूसा से अपने अधिकार में से कुछ उसे देने के लिए कहा ताकि इस्राएल की सारी मण्डली आज्ञाकारी हो सके। (गिनती 27:15-20)। यह जानते हुए कि नेतृत्व संभालने के दौरान उसे कई चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा, मूसा ने यहोशू को मजबूत और साहसी होने के लिए प्रोत्साहित किया और कहा कि प्रभु उसके साथ रहेगा। (व्यवस्था. 31:6-8)। जब यहोवा ने मूसा को उस व्यवस्था और आज्ञाओं को जो उसने लोगों को सिखाने के लिये लिखी थी, देने के लिये पहाड़ पर आने को कहा, तब मूसा, यहोशू को संग ले गया। मूसा पहाड़ पर चढ़ गया और वहाँ 40 दिन और 40 रात रहा। यहोशू 40 दिन तक पहाड़ के बीच में रहा होगा, क्योंकि जब मूसा 40 दिन के बाद साक्षी की तस्वीरों के साथ नीचे आया, तो यहोशू वहाँ था (निर्गमन 24:1,2,9-18; 32:15-17)। जब इस्राएलियों ने सोने का बछड़ा बनाया और मूर्तिपूजा में शामिल हो गए, तब यहोशू मूसा के साथ डेरे के बाहर तम्बू में सेवा करता रहा। वहाँ यहोवा ने मूसा से आमने-सामने बातें की। जब मूसा छावनी में लौट आया, तब भी यहोशू तम्बू से बाहर नहीं निकला। यहोशू अपनी ज़िम्मेदारियों के प्रति बहुत सावधान था (निर्गमन 33:7,11)।



प्रिय युवाओं! आपको यह पता होना चाहिए कि यहोशू को एक नेता बनने के लिए कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा और कई बलिदान करने पड़े। यदि आप यीशु के लिए उपयोगी बनना चाहते हैं, तो यहोशू की तरह अपना जीवन समर्पित करें और प्रभु आपको एक उपयोगी पात्र के रूप में ढालेंगे! क्या आप उसकी इच्छा के अनुसार ढाले जाने के लिए समर्पण करेंगे?

**लोग जो ढाले जाने के लिए,
प्रतिबद्ध होने में विफल रहे!**



लूत की पत्नी

लूत और उसका परिवार, इब्राहीम के परिवार के साथ कनान में रहे। इब्राहीम और लूत के लिए पर्याप्त जगह नहीं थी क्योंकि उन दोनों के पास जो पशु थे उनकी संख्या बढ़ती जा रही थी। इसलिए, इब्राहीम ने लूत से कहा कि वे एक ही स्थान पर एक साथ नहीं रह सकते। उसने लूत को जिस दिशा में जाना है उसे चुनने की अनुमति दी और उसने कहा कि वह दूसरी दिशा लेगा। चूंकि सदोम नगर सुन्दर और समृद्ध था, लूत अपने परिवार को लेकर वहीं रहने लगा। सदोम और पड़ोसी शहर अमोरा के लोग बहुत पापी थे। इसलिए, यहोवा ने उन नगरों को नष्ट करने का निश्चय किया। जैसा कि यहोवा ने लूत और उसके परिवार को बचाने के लिए सोचा, उसने दो स्वर्गदूतों को विनाश के बारे में चेतावनी देने के लिए भेजा और उन्हें तुरंत शहर छोड़ने के लिए कहा। परन्तु लूत विलम्ब कर रहा था और तुरन्त नहीं छोड़ा। इसलिए, स्वर्गदूतों ने लूत, उसकी पत्नी और उसकी बेटियों का हाथ पकड़ा और उन्हें जल्दी से शहर से बाहर ले गए। उन्होंने उन्हें वहीं छोड़ दिया और बिना मुड़े और पीछे देखे वहां से भागने को कहा। लूत और उसकी बेटियों ने यहोवा के वचनों को माना और सदोम से भाग गए। लेकिन लूत की पत्नी को सदोम को छोड़ने का मन नहीं था और इसलिए कुछ दूर जाने के बाद उसने पीछे मुड़कर देखा। जैसे ही उसने पीछे मुड़कर देखा वह नमक के खम्भे में बदल गई। लूत और उसके बच्चे जानते थे कि यहोवा जो कुछ भी करता है, वह अच्छे के लिए करेगा और खुद को ढाले जाने के लिए मौका दिया, लेकिन लूत की पत्नी ने खुद को ढालने नहीं दिया और इसलिए वह नमक का खंभा बन गई।

प्रिय युवाओं! जब आप परमेश्वर की इच्छा के अनुसार ढाले जाने के लिए आत्मसमर्पण करते हैं, तो वह आपको एक सुंदर बर्तन बनाता है, जो उसके उद्देश्य के लिए उपयोगी होता है। यदि आप परमेश्वर को अपने आप को ढालने की अनुमति नहीं देते हैं तो आप लूत की पत्नी की तरह किसी के लिए भी बेकार होंगे। क्या आप परमेश्वर के द्वारा ढाले जाने के लिए स्वयं को समर्पित करेंगे?

हारून

मूसा के भाई हारून को परमेश्वर के वचन बोलने के लिए भेजा गया था। तब से हारून की यात्रा मूसा की यात्रा पर निर्भर थी। जब इस्राएल के लोगों ने मिस्र छोड़ दिया, तो हारून उनके साथ जाने वालों में से एक था। मूसा पहाड़ पर चढ़ गया और वहां यहोवा के साम्हने चालीस दिन तक रहा।

जब पहाड़ की तलहटी पर लोगों ने सन्न खो दिया, तब हारून के पास आकर पूछा, मूसा को क्या हुआ? और कहा, तू हमारे लिए देवता बना। हारून ने मान लिया और उनकी सोने की बालियां बटोर कर एक सोने का बछड़ा बनाकर उन्हें दे दिया। लोगों ने उसे अपना देवता मानकर, खाया पिया और खेलने लगे। वहीं हारून लोगों से परमेश्वर के विरुद्ध पाप करवा रहा था। जब मूसा व्यवस्था और आज्ञाओं की तस्खियों के साथ नीचे आया, तो जो कुछ हुआ था, उसे जानकर वह बहुत क्रोधित हुआ (निर्गमन 32:1-6)। जब हारून और मूसा ने मरीबा के जल के पास यहोवा के वचनों को न माना, तब हारून उस देश का अधिकारी न हुआ, जिसकी प्रतिज्ञा इस्राएल से की गई थी (गिनती 20:22-24)।

प्रिय युवाओं! हारून ने अपना सारा जीवन यहोवा की सेवा में लगा दिया। लेकिन जब लोग अपने लिए एक ईश्वर चाहते थे, तो उसकी उनकी आवाज सुनी लेकिन उन्हें सही तरीके से मार्गदर्शन करने में असफल रहे। क्या आप भी हारून की समान परमेश्वर की आज्ञा की बाट नहीं जोहते, वरन अपनी इच्छा के अनुसार करते हो?



Petra

पतरस के साथ एक यात्रा
भाग - 8

कलीसिया की स्थापना और पतरस का पहला उपदेश!

पिन्तेकुस्त शब्द का अर्थ है 'पचासवां दिन'। यह यहूदियों द्वारा प्रतिवर्ष मनाया जाने वाला दूसरा प्रमुख त्योहार है। यह कटनी का पर्व है, जहाँ लोग अपनी जमीन का पहला फल परमेश्वर को अर्पित करते हैं। यीशु के पुनरुत्थान के बाद, इस दिन को पवित्र आत्मा से जुड़े पहले बपतिस्मा को चिह्नित किया। भूमि के पहले फलों की तरह, कलीसिया के लिए, यह पिन्तेकुस्त, दुनिया में परमेश्वर के लिए आत्माओं की कटनी की शुरुआत का प्रतीक है।

कलीसिया की उत्पत्ति कहाँ से हुई? किस दिन हुई? कलीसिया का मुखिया कौन था? इन सभी प्रश्नों का उत्तर प्रेरितों के काम के पहले अध्याय में पाया जा सकता है। पहली कलीसिया यरूशलेम के ऊपरी कमरे में पहले पिन्तेकुस्त दिवस पर शुरू हुई थी, जिसका प्रमुख और नेता मसीह था।

यीशु ने पतरस के बारे में जो बात कही, की " मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा, और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे " वह उस दिन पूरी हुई। पहले कलीसिया में इकट्ठे हुए लोगों की संख्या

120 थी और उपदेशक पतरस था, जो प्रारंभिक कलीसिया का मुख्य स्तंभ था। पतरस का प्रचार उन लोगों के लिए आश्चर्यजनक था जिन्होंने केवल यीशु को प्रचार करते देखा था।



पतरस, जिसने यीशु को अस्वीकार कर दिया क्योंकि वह दासी से डर गया था, जो केवल मलखुस के कान को तलवार से काट दिया था जब यीशु को दुष्ट लोगों द्वारा पकड़ लिया गया था, जो अनपढ़ और मूर्ख थे। पिन्तेकुस्त के दिन, जब वे प्रभु की आराधना कर रहे थे, उसने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होने के बाद (प्रेरितों के काम 2:4) निडरता से इस्राएल के लोगों, अधिकारियों और पुरनियों के सामने प्रचार किया। अपने

पहले उपदेश में, उसने पश्चाताप, बपतिस्मा और हठीली पीढ़ी को छोड़ने का उपदेश दिया। उस समय कई लोगों ने उसके संदेश को स्वीकार किया। और वे प्रेरितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने, और रोटी तोड़ने, और प्रार्थना करने में लौलीन रहे (प्रेरितों के काम 2:36-47)। पतरस, जिसने यीशु से स्वर्ग की कुंजियाँ प्राप्त की थी, उसने उस दिन 3000 लोगों को कलीसिया में जोड़ा,

जिसमें वे लोग भी शामिल थे जिन्होंने यीशु को क्रूस पर चढ़ाया था। एक और दिन, उसके उपदेश के कारण 5000 लोगों ने यीशु पर विश्वास किया (प्रेरितों के काम 4:1-4)। यदि एक पापी का पश्चाताप स्वर्ग में इतना आनंद दे सकता है, तो क्या शब्दों द्वारा 3000 और 5000 लोगों के पश्चाताप करने पर पतरस द्वारा प्राप्त स्वर्ग के आनंद का वर्णन किया जा सकता है? पतरस को उस दिन का नायक मानकर सारा स्वर्ग आनन्दित होता और मगन होता।

पतरस और हनन्याह - सफीरा (प्रेरितों के काम 5:1-11)

शुरुआती विश्वासियों में आर्थिक रूप से कमजोर और मजबूत दोनों तरह के लोग शामिल थे। परमेश्वर के कई बच्चे स्वेच्छा से अपना धन प्रेरित के चरणों में ले आते थे। हनन्याह और सफीरा ऐसे जोड़े थे जो अपनी प्रसिद्धि के लिए इस तरह की सुविचारित योजना का उपयोग करने के लिए उत्सुक थे। वे परमेश्वर की उपस्थिति में झूठ बोलते हुए पकड़े गए और तुरंत दंड भुगतना पड़ा। पति के प्रति आज्ञाकारिता आवश्यक है, लेकिन जब कोई स्त्री परमेश्वर के विरुद्ध काम करने के



लिए उसका समर्थन करती है, तो उसका अंत कभी अच्छा नहीं होगा। सफीरा का जीवन इसका उदाहरण है। जबकि परमेश्वर ने उस विधवा की प्रशंसा की, जिसने अपने सभी दो सिक्के भेंट के रूप में दिए, तुरंत अपने फैसले को उस जोड़े के झूठ से प्रकट करता है, जिसने अपनी पैतृक भूमि बेच दी थी और एक बड़ी राशि को भेंट के रूप में देने के लिए ले आए थे। हनन्याह-सफीरा के पाप का मूल कारण धन और प्रसिद्धि की प्रति उनकी लालसा थी। पतरस ने दूसरों के मन के विचार कैसे जाने? हनन्याह और सफीरा दोनों ने पतरस को उनका चेहरा देखने वाला एक साधारण व्यक्ति समझा। चूंकि पतरस को पवित्र आत्मा द्वारा प्रकाशन की आत्मा दी गई थी, जो उसके भीतर था,

उसने अन्य लोगों के दिलों के विचारों को पहचाना। परमेश्वर का न्याय तुरन्त पूरा हुआ क्योंकि पतरस ने साहस के साथ उनके पापों की निंदा उस आत्मा के वरदानों से की जो उसके पास थी। "सारी कलीसिया पर और उन बातों के सब सुनने वालों पर बड़ा भय छा गया" (प्रेरितों के काम 5:11)

पतरस और जादूगर शमौन (प्रेरितों के काम 8:5-25)

फिलिप्पुस के उपदेश ने कई सामरी लोगों को यीशु को स्वीकार करने के लिए प्रेरित किया। जब पतरस और यूहन्ना ने सामरियों के पश्चाताप के बारे में सुना, तो वे उनके लिए प्रार्थना करने आए और पवित्र आत्मा प्राप्त करने के लिए उन पर हाथ रखे। इस कारण बहुत से लोग पवित्र आत्मा से भर गए। हालांकि शमौन नाम के एक जादूगर ने यीशु पर विश्वास किया और बपतिस्मा लिया, पर उसने आत्मा को प्राप्त करने की कोशिश नहीं की, बल्कि परमेश्वर के उपहार को खरीदने और एक थोक व्यापारी बनने की इच्छा की। परिणामस्वरूप वह शापित हो गया। हालांकि सामरिया के युवाओं और बुजुर्गों का मानना था कि



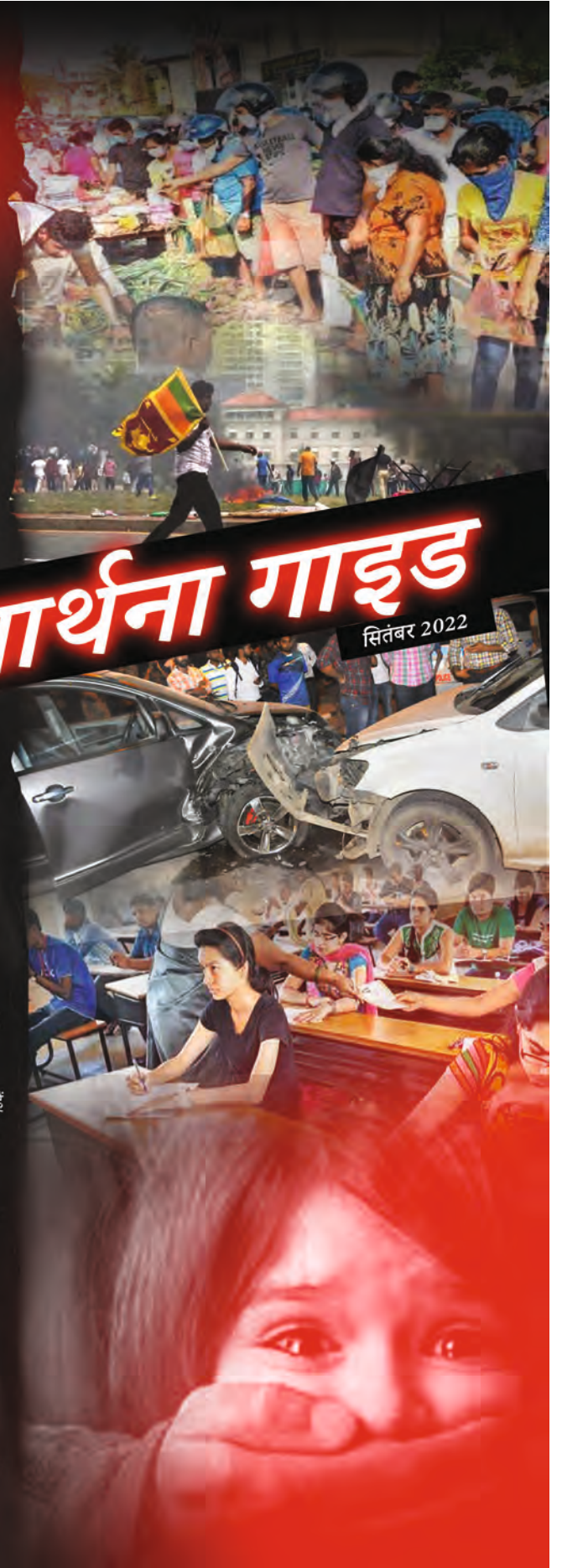
शमौन परमेश्वर की शक्ति का सबसे बड़ा रूप है, परन्तु पतरस के विचार में वह कड़वाहट के ज़हर से और अधर्म से बंधा हुआ था। एक बार जब पतरस ने शमौन के बारे में सब कुछ बता दिया, तो जादूगर डर गया, उसने खुद को दीन किया और पतरस से उसके लिए प्रार्थना करने को कहा। चूंकि पवित्र आत्मा की शक्ति ने पतरस को छिपे हुए रहस्यों को प्रकट किया, तो एक जादूगर ने डर के साथ पश्चाताप किया।

कई और महत्वपूर्ण घटनाओं के साथ पतरस के साथ यह यात्रा जारी रहेगी ...

- 1 आइए हम श्रीलंका में भोजन के बिना पीड़ित 63 लाख लोगों के लिए खाद्य सामग्री की उपलब्धता के लिए प्रार्थना करें।
- 2 आइए प्रार्थना करें कि यह आर्थिक संकट और न बिगड़े।
- 3 आइए हम श्रीलंका में शांति और इन दंगों के अंत के लिए प्रार्थना करें।
- 4 आइए हम श्रीलंका में एक नई सरकार के गठन और देश की अर्थव्यवस्था की बहाली के लिए प्रार्थना करें।
- 5 देश भर में राष्ट्रीय राजमार्ग दुर्घटनाओं में 32,873 लोगों की मौत हुई। आइए प्रार्थना करें कि इन दुर्घटनाओं को रोका जाए।
- 6 हम प्रार्थना करें कि वाहन चालक यातायात नियमों की उपेक्षा न करें बल्कि नियमों का पालन करें।
- 7 दुर्घटनाएं शराब पीकर गाड़ी चलाने और गाड़ी चलाते समय मोबाइल फोन पर बात करने के कारण होती हैं। आइए हम प्रार्थना करें कि लोग सड़क के नियमों का पालन करें और उसके अनुसार कार्य करें।
- 8 2020 में 3,66,138 हादसों में 1,31,714 लोगों की मौत हुई है। आइए प्रार्थना करें कि ऐसी मौतें दोबारा न हों।
- 9 देशभर में 18 लाख छात्रों ने नीट की परीक्षा दी है। आइए हम परीक्षा लिखने वाले छात्रों की शांति के लिए प्रार्थना करें।
- 10 आइए हम प्रार्थना करें कि प्रत्येक छात्र को गलत निर्णय लेने से बचाया जाए।
- 11 आइए हम प्रार्थना करें कि परिणाम के बारे में शंकाओं को दूर किया जाए और वे आत्मविश्वासी हों।
- 12 आइए हम उन छात्रों में आशा के लिए प्रार्थना करें जो यह महसूस करते हैं कि यदि वे अपनी परीक्षा में असफल हो गए तो उनका जीवन समाप्त हो जाता है।
- 13 आइए हम स्कूल और कॉलेज जाने वाले छात्रों की सुरक्षा के लिए प्रार्थना करें।
- 14 हम प्रार्थना करें कि स्कूल-कॉलेजों में लड़कियों के साथ होने वाले यौन उत्पीड़न, बलात्कार और अपहरण को पूरी तरह से रोका जाए।
- 15 हम प्रार्थना करें कि स्कूलों और कॉलेजों में छात्रों के खिलाफ हिंसा और दंगों को खत्म किया जाए और बेहतर शिक्षा दी जाए।
- 16 आइए हम प्रार्थना करें कि देश में कोरोना वायरस का खात्मा हो और देश में सुख-शांति बनी रहे।

प्रार्थना गाइड

सितंबर 2022



17 आइए हम देश के कई हिस्सों में कोरोना, मंकीपॉक्स और विभिन्न अन्य संक्रमणों से प्रभावित लोगों के शीघ्र स्वस्थ होने के लिए प्रार्थना करें और ये रोगाणु फिर कभी किसी पर हमला न करें।

18 आइए हम प्राकृतिक आपदाओं के कारण होने वाली मौतों और अन्य नुकसान की रोकथाम के लिए प्रार्थना करें।

19 भारत के कई हिस्सों में भारी बारिश से लोग परेशान हैं। आइए हम ऐसी बारिश के कारण होने वाली मौतों की रोकथाम के लिए प्रार्थना करें।

20 सामग्री और अन्य सामानों की कीमतों में वृद्धि के कारण गरीब और मध्यम वर्ग के लोग सबसे ज्यादा प्रभावित होते हैं। आइए हम देश की अर्थव्यवस्था में अच्छी प्रगति के लिए प्रार्थना करें।

21 आइए हम प्रार्थना करें कि छोटे व्यवसाय करने वाले लोगों की आजीविका बढ़ाई जाए। आइए हम राष्ट्रीय नेताओं से उन कार्यक्रमों को लागू करने के लिए भी प्रार्थना करें जो गरीब लोगों की आजीविका बढ़ाने में मदद करते हैं।

22 हम प्रार्थना करें कि सरकार बेरोजगार युवाओं को रोजगार के अवसर प्रदान करने के लिए कदम उठाए।

23 आइए हम उन युवाओं के लिए प्रार्थना करें जो अपनी पढ़ाई के लिए उपयुक्त नौकरी खोजने और आशीषित होने के लिए संघर्ष कर रहे हैं।

24 ऐसे युवा हैं जो नौकरी के अवसरों की कमी के कारण गलत रास्ते अपनाते हैं। आइए हम उन दुष्ट आत्मा के कार्यों के विरुद्ध प्रार्थना करें जो युवाओं के मन को पूरी तरह से नष्ट करने के लिए विचलित करते हैं।

25 आइए हम प्रार्थना करें कि सरकार उन सभी के लिए नौकरी प्रदान करने के लिए अच्छी योजनाएं लेकर आए जो अपने लिए उपयुक्त नौकरी की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

26 आइए हम सभी चर्चों पर परमेश्वर की प्रतिज्ञा की गई बेदारी की आग के लिए प्रार्थना करें।

27 हम कलीसियाओं के पवित्र होने, और उनके बीच फूट दूर करने, और परमेश्वर के सेवकों में पवित्रता के लिये प्रार्थना करें।

28 आइए हम कलीसियाओं की शुद्धि और जोशीले मिशनरियों, मसीह के लिए खड़े होने के लिए प्रार्थना करें।

29 आइए हम प्रार्थना करें कि सभी चर्च प्रार्थना योद्धाओं को खड़ा करें जो लोगों में बेदारी और उद्धार के लिए और प्रार्थना की भावना को मंडलियों में डालने के लिए याचना करते हैं।

30 आइए हम प्रार्थना करें कि उन गांवों में चर्च बनाए जाएं जहां चर्च नहीं हैं और प्रतिदिन कई लोगों को मंडलियों में जोड़ा जाए।



RED

Alert

सुलैमान!

इस रेड अलर्ट श्रृंखला के माध्यम से हम 'लोगों के दयनीय अंत' पर ध्यान कर रहे हैं, जिन्हें परमेश्वर ने चुना था, लेकिन उन्होंने अपनी गलतियों पर चेतावनी पाने के बाद भी पश्चाताप करने से इनकार कर दिया। ये बातें उनके साथ उदाहरण के रूप में हुईं और हमारे लिए चेतावनी के रूप में लिखी गईं, जिन पर युगों की परिणति आ गई है (1 कुरिन्थियों 10:11)। अगर हम इन चेतावनियों पर ध्यान दें और खुद को सुधारें, तो हमें बड़ी आशीषें मिलेंगी। पिछले महीने हमने यीशु के एक शिष्य यहूदा इस्करियोती के पतन और उसके पीछे के कारण पर मनन किया।

रेड अलर्ट की इस कड़ी में, आइए हम इस्राएल के राजा और दाऊद

सुलैमान, जो परमेश्वर को इतना प्रसन्न करता था, पीछे क्यों हट गया? उसका क्या कारण था? यह घटना 1 राजा 11:1-2 में दर्ज है।

दुनिया के लिए अभिलाषा!

परमेश्वर ने सुलैमान को भरपूर बुद्धि और धन दिया। इस वजह से उनकी ख्याति पूरे देश में फैल गई। उसके विरुद्ध उठ खड़े हुए शत्रुओं का सर्वनाश कर दिया गया। इस्राएल के पूरे देश में शांति और समृद्धि थी। देखो, यह कैसी बड़ी आशीष है। जैसे-जैसे धन



के पुत्र सुलैमान पर मनन करें। राजा सुलैमान का आरम्भ भव्य और गौरवशाली था। परमेश्वर ने उसे न केवल वह बुद्धि दी जो उसने माँगा था, बल्कि वह धन भी दिया जो उसने माँगा नहीं था। उसने परमेश्वर के मन्दिर को बनाया और पवित्र किया, जिसे उसका पिता दाऊद नहीं बना सका, हालाँकि वह ऐसा करना चाहता था।

और समृद्धि बढ़ती गई, सुलैमान का हृदय परमेश्वर से दूर हो गया और सांसारिक अभिलाषाओं की ओर चला गया। दुनिया की अभिलाषाओं का आनंद लेने के लिए उत्सुक उसने कई विदेशी महिलाओं से शादी की।

उसने उन्हें अपनी पत्नियों और रखैलियों के रूप में लिया। यह उनके

पतन का पहला कारण था। जब यीशु मसीह हमें प्यार करता है, आशीष देता है और बढ़ाता है, तो उस आशीष से प्रभु की महिमा होनी चाहिए। अन्यथा, भले ही यह स्वयं प्रभु की आशीष हो, यह हमें उनसे अलग कर देगा। बाइबल कहती है, "तुम न तो संसार से और न संसार की वस्तुओं से प्रेम रखना।" (1 यूहन्ना 2:15)। आज आपको परमेश्वर से क्या अलग करता है? आपकी प्रार्थना में क्या बाधा है? आपको वचनों को पढ़ने में क्या बिगाड़ता है? आइए जाँच करें और उन चीज़ों से छुटकारा पाएं जो हमें परमेश्वर के प्रेम से अलग करती हैं। आइए हम परमेश्वर के प्रेम में बने रहें।

अन्य देवताओं का अनुसरण!

सुलैमान ने परमेश्वर के वचन की अवहेलना की और विदेशी महिलाओं की लालसा की। उन्होंने सुलैमान को मूर्तिपूजक बना दिया और इस्राएल के सारे देश को मूर्तियों से भर दिया, और देश को अशुद्ध कर दिया, और इस्राएल देश और प्रजा को भटका दिया। इस कारण सुलैमान, जो यहोवा के द्वारा चुना हुआ और प्रिय था, भटक गया, और राष्ट्र ने दुःख उठाया और यहोवा से दूर



हो गए। कल्पना कीजिए कि इससे परमेश्वर के हृदय पर कितना प्रभाव पड़ा होगा। हम भी, अक्सर दुनिया के साथ जाते हैं और पापमय वस्तुओं को मूर्तियों के रूप में हमारे जीवन में रखते हैं जो परमेश्वर को प्रसन्न नहीं करते हैं। इसलिए, हम परमेश्वर के प्रेम से अलग हो गए और पाप के दास हो गए।

परमेश्वर की चेतावनी को अनदेखा करना!

राजा सुलैमान भटक गया और सांसारिक सुखों की अभिलाषा के कारण परमेश्वर से अलग हो गया। परन्तु परमेश्वर ने उसके प्रति अपने महान प्रेम के कारण, सुलैमान को दो बार दर्शन दिए और उसे अपने निकट आने की चेतावनी दी। परन्तु यहोवा उस पर क्रोधित हुआ क्योंकि उसने चेतावनी को ठुकरा दिया (1 राजा 11:10)। उसके पाप के कारण इस्राएल जाति दो भागों में बँट



गई। आज भी, जिन बातों का पालन करने के लिए परमेश्वर हमें कहते हैं, वे हमें कठिन लग सकते हैं, लेकिन यह निश्चित रूप से हमारे भले और आशीष के लिए होंगे। "वर्तमान में हर प्रकार की ताड़ना आनन्द की नहीं, वरन् शोक की बात मालूम होती है, तौभी जो उसको सहते सहते पक्के हो गए हैं, बाद में उन्हें चैन के साथ धर्म का प्रतिफल मिलता है" (इब्रानियों 12:11)। हो सकता है कि यदि परमेश्वर आपको जो इसे पढ़ रहे हैं, किसी ऐसी चीज के बारे में चेतावनी दे रहे हैं, तो बिना देर किए खुद को पश्चाताप करने के लिए प्रतिबद्ध करें।

प्रिय युवाओ !!

सुलैमान की शुरुआत अच्छी रही। लेकिन उसका अंत बहुत ही दयनीय था। इस संसार के प्रति उसको प्रेम था, अपनी इच्छाओं के आगे झुककर उसने जिन विदेशी स्त्रियों से विवाह किया, उसने उसका हृदय प्रभु से दूर कर दिया।

आज की दुनिया में, गलत दोस्ती और रिश्ते जो हम अपने जीवन में यह सोचकर अनुमति देते हैं, कि 'इसमें क्या गलत है', जो हमें परमेश्वर के प्यार से अलग कर देता है और हमें विनाश के रास्ते पर ले जाता है।

शायद, अगर आप इसे पढ़ रहे हैं, किसी गलत दोस्ती और रिश्ते में फँस गए हैं, तो तुरंत अपनी गलती स्वीकार करें, पाप स्वीकार करें और इसे छोड़ दें। क्योंकि यह अंतिम क्षण हो सकता है। परमेश्वर अपने प्रेम के कारण आपको चेतावनी देता है। "मेरा आत्मा मनुष्य से सदा लों विवाद करता न रहेगा (उत्पत्ति 6:3)।

आइए हम अगले महीने मिलते हैं, रेड अलर्ट में एक और शख्स के साथ...